कोई लाजमान[1] बात मुँह से निकालते हैं ? पूछिए सबों से । महतमाजी कहिन हैं···"

नीम के पेड़ का कागा कायँ-कायँ कर उठा ।

हरगौरी गुस्से से थर-थर काँप रहा है । ··· ये लोग भी अजीब हैं । एक घंटा पहले बालदेव की टोकरी-भर शिकायत कर रहे थे, लीडरी सटकाने की बात कह रहे थे, और अभी उसका बाप भी बालदेव की खुशामद कर रहा था ! ग्वाला होकर लीडरी ··· ?

"गुअरटोलीवाले हँसेरी[2] लेकर आ रहे हैं," एक लड़का दौड़ता-हाँफता आकर खबर दे गया । ऐं ! ··· गाँव के उत्तर में शोरगुल हो रहा है । खूँटे में बँधे हुए बैलों ने चौकन्ने होकर कान खड़े किए । गाँव के बाहर चरती हुई बकरियाँ दौड़ती-मिमियाती हुई गाँव में भागी आ रही हैं । कुत्ते भूँकने लगे । ··· बात क्या हुई ?

"अरे बेटा रे ! गौरी बेटा रे ! ··· आँगन में आ जा बेटा रे ! गुअरटोली का कलिया पगला गया है !" हरगौरी की माँ छाती पीटती और रोती हुई आई, और हरगौरी को घसीटकर आँगन में ले गई । बच्चे रोने लगे ।

"अरे, बात क्या हुई ?"

"भाला निकालो छत्तर !"

"हमारी गंगाजीवाली लाठी कहाँ है ?"

"तीर निकाल रे !"

"अरे बात क्या है ? हँसेरी क्यों ··· ?"

कौन किसका जवाब देता है ! किसे फुरसत है ! सारे गाँव में कुहराम मचा हुआ है । हरगौरी की माँ अब शिवशक्करसिंघ को आँगन में बुला रही है । चिल्ला रही है, "गुअरटोली का रौदी बूढ़ा आया है । ··· गुअरटोली में बूढ़े-बच्चे खौल रहे हैं कि हरगौरी ने बालदेव को जूते से मारा है । कुकुरू का बेटा कलचरना काली किरिया[3] खाया है—हरगौरी का खून पीएँगे । ··· आँगन में आ जाओ गौरी के बाबू !"

"ओ !" बालदेव दौड़ा, "आप लोग अकुलाइए मत । हम देखते हैं । नासमझ लोग हैं, समझा देते हैं ।"

"एक बार बोलिए प्रेम से ··· महाबीरजी की ··· जै !"

"जै ! जाय ··· जाय !"

बालदेव को देखते ही यादव सेना खुशी से जयजयकार कर उठी । "बोलिए एक बार प्रेम से ··· गन्ही महतमा की ··· जै ! जाय ··· जाय । ऐ ! शांती ! शांती ! चुप रहो, बालदेव जी क्या कहते हैं, सुनो ! ···"

"पियारे भाइयो, आप लोग जो अंडोलन किए हैं, वह अच्छा नहीं । अपना कान देखे बिना कौआ के पीछे दौड़ना अच्छा नहीं । आप ही सोचिए, क्या यह समझदार आदमी का काम है ! ··· आप लोग हिंसावाद करने जा रहे थे । इसके लिए हमको अनसन करना होगा । भारथमाता का, गाँधी जी का यह रास्ता नहीं ··· ।"

सचमुच गियानी आदमी हैं बालदेव जी । अंडोलन, अनसन, और ··· और क्या ? ··· हिंसाबात ! किसी ने समझा ! गियानी की बोली समझना सभी के बूते की बात नहीं । ···

"अनसन क्या करेंगे ?"

"अंट-संट ?"

कलिया कहता था—उपास करेंगे बालदेव जी । कलिया को बुलाकर बालदेव जी कहते थे—कालीचरन, तुम बहुत बहादुर लौजमान हो । लेकिन जोस में होस भी रखना चाहिए । हम खुस हैं, लेकिन उपास करेंगे ।

"सचमुच यदि उस दिन बालदेव जी ठीक समय पर नहीं आ जाते तो कालीचरन इस पार चाहे उस पार कर देता । ··· अरे, हरगौरिया ! कल का छौंड़ा इस्कूल में चार अच्छर पढ़ क्या लिया है लाटसाहेब हो गया है ।"

"अरे, पढ़ता क्या है, दाढ़ी-मोच हो गया है और अपना सकलदीप से दो लास* नीचे पढ़ता है । एकदम फेलियर है । इस साल भी फैल हो गया है । उसका बाप मास्टर को घूस देने गया था । मास्टर गुस्साकर बोला—भागो, नहीं तो तुमको भी फैल कर देंगे ।"

"अरे पढ़ेगा क्या ! सुनते हैं कि लालबाग मेला में लाल पढ़ना में पास हो गया है ।"

बात बनाने में दुलरिया से कोई जीत नहीं सकता । "लाल पढ़ना नहीं समझे ? ··· हा-हा ··· हा-हा ··· खी-खी ! लाल पढ़ना !"

—ढाक-ढिन्ना, ढाक-ढिन्ना !

"चलो रे, अखाड़ा का ढोल बोल रहा है ।"

चार

सतगुरु हो ! सतगुरु हो !

महंथ साहेब सदा ब्रह्म बेला में उठते हैं । "हो रामदास । आसन त्यागो

1. अपशब्द । 2. बलवा करनेवाला दल । 3. कसम ।

* क्लास ।

जी ! लक्ष्मी को जगाओ ! ··· सतगुरु हो ! ये कभी जो बिना जगाए जागें । रामदास ! हो जी रामदास !"

रामदास आँखें मलते हुए उठता है, बाहर निकलकर आसमान में भुरूकुआ[1] को देखता है, फिर रामडंडी[2] को खोजता है । ··· अभी तो बहुत रात बाकी है । महंथ साहब आज बहुत पहले ही जग गए हैं ··· "माघ का जाड़ा तो बाघ को भी ठंडा कर देता है । ··· सरकार, रात तो अभी बहुत बाकी है ।"

"रात बहुत बाकी है तो क्या हुआ ? एक दिन जरा सवेरे ही सही । सोओ मत । धूनी में लकड़ी डाल दो । कोठारिन को जगा दो । ··· सतगुरु साहेब ने सपना दिया है ।"

लछमी उठी । उठकर महंथसाहब के आसन के पास आई । हाथ जोड़कर 'साहेब बंदगी' किया और आँखें मलते हुए कुएँ की ओर चली गई ।

··· लछमी के रग-रग में अब साधु-सुभाव, आचार-विचार और नियम-धरम रम गया है । साहेब की दया है । और यह रामदास ? गुरु जाने, इसकी मति-गति कब बदलेगी ! बचपन से ही साधु की संगति में रहकर भी जो नहीं सुधरा, वह अब कब सुधरेगा ? ··· भक्ति-भाव ना जाने भोंदू पेट भरे से काम ! बस, दो ही गुण हैं--सेवा अच्छी तरह करता है और खंजड़ी बजाने में बेजोड़ है । "अरे हो रामदास ! ··· फिर सो गए क्या ? ··· गंगाजली में जल भर दो ।"

जागहु सतगुरुसाहेब, सेवक तुम्हरे दरस को आया जी
जागहु सतगुरुसाहेब ··· ।
··· डिम-डिमिक-डिमिक, डिम-डिमिक-डिमिक !
भोर भयो भव भरम भयानक भानु देखकर भागा जी,
ज्ञान नैन साहेब के खुलि गयो, थर-थर काँपत माया जी ।
जागहु सतगुरुसाहेब ···

माघ के ठिठुरते हुए भोर को मठ से प्रातकी[3] की निर्गुणवाणी निकलकर शून्य में मँडरा रही है । बूढ़े महंथ साहब पहला पद कहते हैं । दंतहीन मुँह से प्रातकी के शब्द स्पष्ट नहीं निकलते । गले की थरथराहट सुर में बाधा डालती है, बेसुरा राग निकलता है । दमे से जर्जर शरीर में दम कहाँ ! ··· लेकिन लछमी सब सँभाल लेती है । पाँच साल पहले प्रातकी गाने के समय उसकी आँखों की पलकें नींद से लदी रहती थीं । महंथ साहब जब गीत की दूसरी पंक्ति 'भोर भयो भव भरम' गाते थे तो वह बहुत मुश्किल से अपनी हँसी रोक पाती थी—भोर भयो भव भरम ··· ! लेकिन अब नहीं । उसकी बोली मीठी है । उसका सुर मीठा है । वह तन्मय होकर

1. भोर का तारा । 2. तीन-तरवा । 3. प्रभाती ।

गाती है । उसकी सुरीली तान के साथ महंथ साहब के बेसुरे और मोटे राग का मेल नहीं खाता, फिर भी संगीत की निर्मल धारा में कहीं विरोध नहीं उत्पन्न होता । महंथ साहब का मोटा राग लछमी के कोमल लय को सहारा देता है । शहनाई के साथ सुर देनेवाली शहनाई की तरह—भों ओं ओं ओं ओं ··· !

रामदास की खंजड़ी की गमक निःशब्द वातावरण में तरंगें पैदा करती है । खंजड़ी में लगी हुई छोटी-छोटी झुनुकियों की हल्की झुनुक ! मानो किसी का पालतू हिरन नाच रहा हो, दौड़ रहा हो ! डिम डिमिक ! रुन झुनुक-झुनुक !

प्रातकी के बाद बीजक 'शबद' । 'रामुरा झीं झीं जंतर बाजे । करचर्ण बिहुना नाचे । रामुरा झीं-झीं ··· ।'

और तब सत्संग ! रोज इसी बेला में सत्संग होता है । प्रातकी सुनते ही मठ के अन्य साधु-संन्यासी, अतिथि-अभ्यागत तथा अधिकारी-भंडारी वगैरह जग जाते हैं । प्रातकी और बीजक में कोई सम्मिलित हो या नहीं, सत्संग में भाग लेना अनिवार्य है । मठ का भंडारी इसी समय रोज की हाज़िरी लेता है । इस समय जो अनुपस्थित रहे उसकी चिप्पी[1] बंद हो जाती है । सत्संग में महंथसाहब साधुओं और शिष्यों को उपदेश देते हैं, प्रश्नों के उत्तर देते हैं, अज्ञान अंधकार को अपनी वाणी से दूर करते हैं ।

··· सतगुरु सेवा सत्य करि माने सत्य विचार ।
सेवक चेला सत्य सो जो गुरु वचन निहार ।। ···

फिर सातचक्र परिचय !

प्रथम चक्र आधार कहावे गुद स्थल के माँही
द्वितीय चक्र अधिष्ठान कहिए लिंगस्थल के माँही ।
तृतीय चक्र मणिपूरण जानो नाभी स्थल ···

सत्संग समाप्त होते ही भंडारी उपस्थित 'मूर्तियों' की गिनती लेता है—"रानीगंज़ के तीन गो मुरती तो आज सात दिन से धरना देले हथुन । जाए ला कहै हियेन्ह त कहै हथिन बलु सरकार से आज्ञाँ ले ली है । बेला मठ के एक मुरती के बुखार लगलैन्ह है, दोकान में सबुरदाना न भेटाई है ··· ।"

कोठारिन लक्ष्मी दासिन का रोज इसी समय बक-बक झक-झक बहुत बुरा लगता है, सत्संग से प्राप्त की हुई मन की पवित्रता नष्ट हो जाती है । लेकिन क्या करे ? मठ के इस नियम को यदि जरा भी ढीला कर दिया जाए तो साधु-वैरागी एक महीने में ही मठ को उजाड़ देंगे । बाहर के साधुओं के लिए चार ही दिन रहने का

1. राशन ।

नियम है, मगर ··· । "रानीगंज के मूर्तियों को खुद सोचना चाहिए । यहाँ कोई कुबेर का भंडार तो नहीं ··· ।"

"लक्ष्मी," महंथ साहब कहते हैं, "आज-भर रहने दो । भंडारी, जितने मुरती आज हैं, सबों का बालभोग[1] और प्रसाद[2] आज लगेगा । सभी मुरती बैठ जाइए । आज सतगुरु साहेब सपना दीहिन हैं ।"

धूनी में फिर सूखी लकड़ियों के छोटे-छोटे टुकड़े डाल दिए गए । सभी मुरती फिर धूनी के चारों ओर अर्धवृत्ताकार पंक्ति में बैठ गए । लछमी की महंथ साहब के आसन के पास ही लगती है ··· । सभी महंथ साहब की ओर उत्सुकता से देख रहे हैं ।

"आज मध्य रात्रि में, सतगुरु साहेब सपने में मेरे आसन के पास आए । हम जल्दी से उठके साहेब बंदगी किया । हमको 'दयाभाव' देके साहेब कहिन—सेवादास, तुम नेत्रहीन हो, लेकिन तुम्हारे अंतर के नैनों का जोत बड़ा विलच्छन्न है । हम भेख बदल करके आए और तूँ पहचान लिया ? तुम्हारे ज्ञान-नेत्र में दिब्बजोत है । सो तुम्हारे गाँव में परमारथ का कारज हो रहा है और तुमको मालूम नहीं ? गाँधी तो मेरा ही भगत है । गाँधी इस गाँव में इसपिताल खोलकर परमारथ का कारज कर रहा है । तुम सारे गाँव को एक भंडारा दे दो । कहके साहब अंतरधियान हो गए । हमारी निद्रा भंग हो गई । सतगुरु के विरह में चित्त चंचल हो गया । विरह अगिन तक कैसे बूझे, गृहबन अंधकार नहीं सूझे । आखिर, सतगुरु आज्ञा शब्द विचारकर चित्त को शांत किया ।"

महंथ साहब के सपने की बात तुरंत गाँव-भर में फैल गई । बलदेव-हरगौरी संवाद और यादव सेना के अचानक हमले से गाँव की दलबंदी को नया जीवन प्रदान कर दिया था । जोतखी जी की राय है, "यादव लोग बार-बार लाठी-भाला दिखाते हैं; राजपूतों के लिए यह डूब मरने की बात है । फौजदारी में यतलाय[3] देकर इन लोगों का मोचिलका करवा लिया जाए । लेकिन सिंघजी थाना-फौजदारी से घबराते हैं । बात-बात में गाली और डेग-डेग पर डाली ! कानूनी-कचहरी की शरण जाना तो अपनी कमजोरी को जाहिर करना है । समय आने पर बदला ले लिया जाएगा । अकेले यादवों की बात रहती तो कोई बात नहीं थी, इसमें कायस्त समाया हुआ है । मरा हुआ कायस्त भी बिसाता है । फिर, वह बदमाशी हरगौरी की ही है । मेरे दरवाजे पर किसी को उठ जाने के लिए कहना, मेरे दरवाजे पर किसी को मारने के लिए उठना, यह तो अच्छी बात नहीं ।"

यादवटोली में अब दोपहर से ही ढोल बजने लगता है—ढाक-ढिन्ना ढाक-ढिन्ना ! शोभन मोची को एक नया गमछा और नई गंजी मिली है ।

1 जलपान । 2. भात । 3. इत्तला ।

कालीथान के बड़ के पास गाय-भैंस बथान करके दोपहर से ही कुश्ती खेलने लगते हैं यादव संतान । बालदेव जी ने जिस दिन अनसन किया था, शाम को खेलावन यादव के दरवाजे पर कीर्तन हुआ था । बालदेव जी का सिखाया हुआ सुराजी कीर्तन 'धन-धन गांधी जी महराज, ऐसा चरखा चलानेवाले' कीर्तन के बाद बालदेव जी ने भैंस का कच्चा दूध पीकर व्रत तोड़ा था । कहते थे, अब हिंसाबात करने से फिर अनसन करेंगे, अब के दो दिनों का ! सुराजी कीर्तन, लहसन का बेटा सुनरा खूब गाता है । बालदेव जी जबकि फिर उपवास करेंगे तो सुनना । अभी और सीख रहा है । ··· सिपैहियाटोला में तो अब दिन में ही उल्लू बोलता है । तहसीलदार कह रहे थे—राजपूतों की सिट्टी गुम हो गई है । हल्दी बोला[1] दिया है । कालीचरन बहादुर है !

इसपिताल के सभी घर बनकर तैयार हो गए हैं । सिर्फ मिट्टी साटना बाकी है । बिरसा माँझी ने कहा है—संथालटोली की सभी औरतें आकर मिट्टी लगा देंगी आज । अलबत्त मिट्टी लगाती हैं संथालिनें ! पोखता मकान भी मात ! अगले सनिचर को डागडरबाबू ने बालदेव जी से दसखत करा लिया है । भैंसचरमनबाबू[2] जरूर यादव ही होंगे । किसी दूसरी जाति का ऐसा नाम क्यों होगा—भैंसचरमनबाबू ! तहसीलदार के यहाँ जाकर देखो—खुरसी, ब्रींच, बड़े-बड़े बक्से में दवा, बाल्टी, कठौत, लोटा । पानी का कल गाड़ा जाएगा, जैसे रोतहट के मेला में गड़ता है ।

सनिच्चर को ही महंथ साहेब का भंडारा है—पूड़ी-जिलेबी का भोज । सारे गाँव के औरत-मरद बूढ़े बच्चे और अमीर-गरीब को महंथ साहेब खिलावेंगे । सपनौती हुआ है ।

यादवटोली का किसनू कहता है, "अंधा महंत अपने पापों का प्राच्छित कर रहा है । बाबाजी होकर जो रखेलिन रखता है, वह बाबाजी नहीं । ऊपर बाबाजी भीतर दगाबाजी ! क्या कहते हो ? रखेलिन नहीं, दासिन है ? किसी और को सिखाना । पाँच बरस तक मठ में नौकरी किया है; हमसे बढ़कर और कौन जानेगा मठ की बात ? और कोई देखे या नहीं देखे, ऊपर परमेसर तो है । महंथ जब लछमी दासिन को मठ पर लाया था तो वह एकदम अबोध थी, एकदम नादान । एक ही कपड़ा पहनती थी । कहाँ वह बच्ची और कहाँ पचास बरस का बूढ़ा गिद्ध ! रोज रात में लछमी रोती थी—ऐसा रोना कि जिसे सुनकर पत्थर भी पिघल जाए । हम तो सो नहीं सकते थे । उठकर भैंसों को खोलकर चराने चले जाते थे । रोज सुबह लछमी दूध लेने बथान पर आती थी, उसकी आँखें कदम के फूल की तरह फूली रहती थीं । रात में रोने का कारण पूछने पर चुपचाप टुकुर-टुकुर मुँह देखने

1. चित्त कर देना । 2. वाइस चेयरमैन ।

लगती थी ··· ठीक गाय की बाछी की तरह, जिसकी माँ मर गई हो ··· ! वैसा ही चंडाल है यह रमदसवा । वह साला भी अंधा होगा, देख लेना । ··· महंथ एक बार चार दिन के लिए पुरैनिया गया था । हमने सोचा कि चार रात तो लछमी चैन से सो सकेगी । ले बलैया । बाघ के मुँह से छूटी तो बिलार के मुँह में गई । उसके बाद लछमी ऐसी बीमार पड़ी कि मरते-मरते बची । पाप भला छिपे ? रामदास को मिरगी आने लगी और महंथ सेवादास सूरदास हो गए । एकदम चौपट ! ··· हमारा तीन साल का दरमाहा बाकी रखा है । भंडारा करता है ! हम उन लोगों को साधू नहीं समझते हैं ।"

महंथ सेवादास इस इलाके के ज्ञानी साधु समझे जाते थे—सभी सास्तर-पुरान के पंडित ! मठ पर आकर लोग भूख-प्यास भूल जाते थे । बड़ी पवित्र जगह समझी जाती थी । लेकिन जब महंथ दासिन को लाया, लोगों की राय बदल गई । बसुमतिया मठ के महंथ से इसी दासिन को लेकर कितने लड़ाई-झगड़े और मुकदमे हुए । बसुमतिया का महंथ कहता था, लछमी दासिन का बाप हमारा गुरु-भाई था इसलिए बाप के मरने के बाद उस पर मेरा हक है । सेवादास की दलील थी, लछमी पर हमारा अधिकार है । अंत में लछमी कानूनन सेवादास की ही हुई । सेवादास के वकील साहब ने समझाकर कहा था—महंथ साहब ! इस लड़की को पढ़ा-लिखाकर इसकी शादी करवा दीजिएगा । महंथ साहब ने वकीलसाहब को विश्वास दिलाया था—वकीलसाहब, लछमी हमारी बेटी की तरह रहेगी··· लेकिन आदमी की मति को क्या कहा जाए ! मठ पर लाते ही किशोरी लछमी को उन्होंने अपनी दासी बना लिया । लछमी अब जवान हुई है, लेकिन लछमी के जवान होने से पहले ही महंत सेवादास की आँखें अपनी ज्योति खो चुकी थीं । पता नहीं, लछमी की जवानी को देखकर उसकी क्या हालत होती ! अब तो महंथ सेवादास को बहुत लोग प्रणाम-बंदगी भी नहीं करते । ··· धर्म-भ्रष्ट हो गया है । बगुलाभगत है । ब्रह्मचारी नहीं, व्यभिचारी है ।

पूड़ी-जिलेबी और दही-चीनी के भंडारे की घोषणा के बाद जनमत बदल रहा है । ··· कैसा भी हो, आखिर साधु है ! किसने आज तक इतना बड़ा भोज किया ! तहसीलदार ने अपने बाप के श्राद्ध में जाति-बिरादरीवालों को भात और गैर जाति के लोगों को दही-चूड़ा खिलाया था । सिंघजी ने अपनी सास के श्राद्ध में अपनी जाति के लोगों को पूरी-मिठाई और अन्य जाति के लोगों को दही-चूड़ा खिलाया था । खेलावन के यहाँ, पिछले साल, माँ के श्राद्ध में जैसा भोज हुआ सो तो सबों ने देखा ही है । फिर, सारे गाँव के लोगों को, औरत-मरद बच्चों को, आज तक किसने खिलाया है ? चीनी मिलती नहीं । भगमान भगत ने कहा है कि बिलेक में एक बोरा चीनी का दाम है एक नमरी* । चर मन चीनी—दो नमरी !

* सौ रुपए का नोट ।

तंत्रिमा, गहलोत और पोलियाटोली के अधिकांश लोगों ने पूड़ी-जिलेबी कभी चखी भी नहीं । बिरंची एक बार राज की गवाही देने के लिए कचहरी गया तो तहसीलदार ने पूड़ी-जिलेबी खिलाई थी । गाँव में, न जाने कैसे, यह हल्ला हो गया कि बिरंची ने तहसीलदार का जूठा खाया है । ··· जनेऊ देने के लिए जाति के पंडित जी आए थे । बिरंची के सिर पर सात घंटे तक घैला-सुपाड़ी रखने की सजा दी गई थी—पाँच सुपारी पर घैला भर पानी ! ज़रा भी घैला हिला, एक बूँद भी पानी गिरा कि ऊपर से झाड़ की मार ! तहसीलदार साहब क्या कर सकते हैं ! जाति-बिरादरी का मामला है, इसमें वे कुछ नहीं बोल सकते । आखिर पाँच रुपैया जुरमाना और जाति के पंडित जी को एक जोड़ा धोती देकर बिरंची ने अपना हुक्का-पानी खुलवाया था । ··· पूड़ी-जिलेबी का स्वाद याद नहीं !

"जीवनदास !"

"बालदेव जी आए हैं । बनगी बालदेवबाबू !"

"बनगी नहीं, जाय हिंद बोलो, जाय हिंद ! ··· हाँ जी, इस टोले में कितने लोग हैं, हिसाब करके बताओ तो । औरत-मरद, बच्चों का भी जोड़ना । क्या गिनना नहीं जानते ? बिरंची कहाँ है ?"

बालदेव जी घर-घर घूमकर मर्दुमशुमारी कर रहे हैं । बड़ा झंझट का काम है । सिर्फ पोलियाटोले में सात कोड़ी[1] चार, नहीं ··· चार कोड़ी सात; ततमाटोली में पूरे पाँच कोड़ी, दुसाधटोली में दो कोड़ी, कोयरीटोले में छः कोड़ी तीन । ··· यादवटोली का हिसाब कालीचरन कर रहा है । भगवान जाने, सिपैहियाटोली के लोग इसमें भी मीनमेख निकालकर बखेड़ा न खड़ा कर दें । क्या ठिकाना है ! बाभनों ने तो साफ इनकार कर दिया है । यदि बाभनों के लिए अलग प्रबंध न हुआ तो सरब संघटन में नहीं खाएँगे । बाभन-भोजन ही नहीं हुआ तो फिर भोज क्या ! महंथ जी से कहना होगा । बाभन हैं ही कितने, सब मिलाकर दस घर ।

महंथ साहब ने सब सुनकर कहा, "सतगुरु हो ! सतगुरु हो ! बाभन लोगों का अलग इंतजाम कर दो बालदेवबाबू ! इसमें हर्ज ही क्या है ! नहीं हो, तो उन लोगों का प्रबंध मठ पर ही कर दो ।"

इसी समय लछमी दासिन ने आकर खबर दी, "सिपैहियाटोला के लोग भी नहीं खाएँगे । हिबरनसिंघ का बेटा आकर कह गया है, ग्वाला लोगों के साथ एक पंगत में नहीं खाएँगे । हम लोगों के गाँव का आटा-घी-चीनी अलग दे दिया जाए, हम लोग अलग बनवा लेंगे ।"

"सतगुरु हो ! यह तो अच्छा बखेड़ा खड़ा हुआ । अब यादव लोग कहेंगे कि धानुक लोगों के साथ एक पंगत में नहीं खाएँगे ।"

1. एक कोड़ी में बीस संख्या होती है ।

"हिबरनसिंघ के बेटे ने तो यह भी कहा कि बालदेव यदि इंतजामकार रहेगा तो महंथ साहेब का भंडारा भंडुल होगा ।"

"गुरु हो ! गुरु हो !"

"तो महंथ साहेब, हमारे रहने से लोग विरोध करते हैं तो हम खुसी-खुसी ···"

"वाह रे ! यह भी कोई बात है ! महंथ साहेब, मैं कह देती हूँ, यदि बालदेव जी को छोड़कर और किसी को प्रबंध करने का भार दिया तो समझ लीजिए कि भंडारा चौपट हुआ । मैं इस गाँव के एक-एक आदमी को पहचानती हूँ ।"

बालदेव ने पहली बार लछमी की ओर गरदन उठाकर देखने की हिम्मत की । निगाहें ऊपर उठीं और लछमी की बड़ी-बड़ी आँखों में वह खो गया । ··· आँखों में समा गया बालदेव शायद ।

पाँच

मठ पर गाँव-भर के मुखिया लोगों की पंचायत बैठी है । बालदेव जी को आज फिर 'भाखन' देने का मौका मिला है । लेकिन गाँव की पंचायत क्या है, पुरैनिया कचहरी के रामू मोदी की दुकान है । सभी अपनी बात पहले कहना चाहते हैं । सब एक ही साथ बोलना चाहते हैं । बातें बढ़ती जाती हैं और असल सवाल बातों के बवंडर में दबा जा रहा है । सिंघ जी चिल्ला-चिल्लाकर कहते हैं, "उस दिन यदि हम घर में रहते तो खून की नदी बह जाती ।" कालीचरन चुप रहनेवाला नहीं है, "वाह रे ! दरवाजे पर एक भले आदमी को बेइज्जत करना 'इंसान' आदमी का काम है ?" तहसीलदार साहब कहते हैं, "अस्पताल तो सबों की भलाई के लिए बन रहा है । इससे सिर्फ हमारा ही फायदा नहीं होगा । ओवरसियरबाबू कह गए थे कि तहसीलदार साहब जरा मदद दीजिएगा । हम अपने मन से तो अगुआ नहीं बने हैं । तुम्हीं बताओ खिलावन भाई !"

बूढ़े जोतखी जी भविष्यवाणी करते हैं, "कोई माने या नहीं माने, हम कहते हैं कि एक दिन इस गाँव में गिद्ध-कौआ उड़ेगा । लक्षण अच्छे नहीं हैं । गाँव का ग्रह बिगड़ा हुआ है । किसी दिन इस गाँव में खून होगा, खून ! पुलिस-दारोगा गाँव की गली-गली में घूमेगा । और यह इसपिताल ? अभी तो नहीं मालूम होगा । जब कुएँ में दवा डालकर गाँव में हैजा फैलाएगा तो समझना । शिव हो ! शिव हो !"

बालदेव भाखन के लिए उठना चाहता था कि लछमी हाथ जोड़कर खड़ी हो

गई, "पंच परमेश्वर !"

मानो बिजली की बत्ती जल उठी । सन्नाटा छा गया । सफेद मलमल की साड़ी के खूँट को गले में डालकर लछमी हाथ जोड़े खड़ी है, "पंच परमेश्वर !"

"लछमी," महंथ साहब शून्य में हाथ फैलाकर टटोलते हुए कहते हैं, "लछमी तुम चुप रहो ।"

लछमी रुकी नहीं, कहती गई, "जोतखी जी ठीक कहते हैं । गाँव के ग्रह अच्छे नहीं हैं । जहाँ छोटी-मोटी बातों को लेकर, इस तरह झगड़े होते हैं, जहाँ आपस में मेल-मिलाप नहीं, वहाँ जो कुछ न हो वह थोड़ा है । गाँव के मुखिया लोग ही इसके लिए सबसे बड़े दोखी हैं । सतगुरुसाहेब कहिन हैं—'जहाँ मेल तहाँ सरग है ।' मानुस जन्म बार-बार नहीं मिलता है । मानुस जन्म पाकर परमारथ के बदले सोआरथ देखें तो इससे बढ़कर क्या पाप हो सकता है ? परमारथ में जो 'विघिन' डालते हैं वे मानुस नहीं । आप लोग तो सास्तर-पुरान पढ़े हैं, जग्ग भंग करनेवालों को पुरान में क्या कहा है, सो तो जानते ही हैं । हमारे कहने का मतलब यह है कि सब कोई भेदभाव तेयाग के, एक होकर के परमारथ कारज में सहयोग दीजिए । आप लोग तो जानते हैं—'परमारथ कारज देह धरो यह मानुस जन्म अकारथ जाए ।' बस हाथ जोड़कर पंच परमेश्वर से बिनै है, झगड़ा तेयागकर मेल बढ़ाइए । सतगुरु साहेब गाँव का मंगल करेंगे । आगे आप लोगों की मरजी ।"

लछमी बैठ गई । उसका चेहरा तमतमा गया है, गाल लाल हो गए हैं और कपाल पर पसीने की बूँदें चमक रही हैं । पंचायत में सन्नाटा छाया हुआ है, मानो जादू फिर गया हो । बालदेव जी का भाखन देने का उत्साह कम हो गया है । वह दोहा-कवित्त नहीं जानता, सास्तर-पुरान भी नहीं पढ़ा है । जेहल में चौधरी जी उसे पढ़ाया करते थे । तीसरा भाग में—'भारी बोझ नमक का लेकर एक गधा दुख पाता था' के पास ही वह पढ़ रहा था कि चौधरी जी की बदली हो गई । उसी दिन से उसकी पढ़ाई भी बंद हो गई । लेकिन ··· वह जरूर भाखन देगा । उसने लछमी की ओर देखा तो और मानो नशे में उठकर खड़ा हो गया, "पियारे भाइयो !"

"बोलिए एक बार प्रेम से ··· गंधी महतमा का जै !" यादवटोली के नौजवानों ने जयजयकार किया ।

"पियारे भाइयो ! कोठारिन साहेब जितना बात बोली, सब ठीक है । लेकिन सबसे बड़ा दोखी हम हैं । हमारे कारन ही गाँव में लड़ाई-झगड़ा हो रहा है । हम तो सबों का सेवक हैं । हम कोई बिदमान नहीं हैं, सास्तर-पुरान नहीं पढ़े हैं । गरीब आदमी हैं, मूरख हैं । मगर महतमा जी के परताप से, भारथमाता के परताप से, मन में सेवा-भाव जन्म हुआ और हम सेवक का बाना ले लिया । आप लोगों को तो मालूम है, जयमंगलबाबू, जो मेनिस्टर हुए हैं, अपना दस्तखत भी नहीं जानते हैं । बहुत छोटी जात का है । वह भी गरीब आदमी थे, मूरख थे । मगर मन में